प्रातः क्लास 10-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

कई बच्चे कहते हैं बाबा हमको याद नहीं पड़ता है। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं कि अपने घर को याद करो। उनको कहा जाता है टावर ऑफ सायलेन्स। टावर कहा जाता है जो बहुत ऊंच होता है। तो वह है टावर ऑफ सायलेन्स। टावर ऑफ सुख। तुम यहां बैठे तो तुम्हारी बुद्धि जानी चाहिए घर तरफ। वह है शान्ति का टावर। ऊंच ते ऊंच को टावर कहा जाता है। तुम शान्ति के टावर हो। वहां जाने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। टावर में कैसे जाते हो, वह टावर में रहने वाला बाप बैठ शिक्षा देते हैं कि मुझे याद करो। उनको घर, मुक्ति धाम शान्तिधाम भी कहा जाता है। यह बातें कोई जंगली जानवर नहीं जानते। बच्चों को समझाया गया है तुम अपने सुखधाम शान्तिधाम को याद करो। नहीं याद कर सकते हो, वहां नहीं रहते हो तो जैसी जंगली कांटे हो। इसलिये दुःख भी भासता है। अगर समझे हम आत्मा शान्तिधाम के निवासी हैं। क्योंकि वह है घर। बाप का घर है ना। तुम हो बच्चे। ऐसी2 सहज बातें बातें भी माया भूला देती है। हू बहू तुम जंगली होने कारण अशान्ति दुःख आदि सभी भासता है। बाप कहते हैं बच्चे अपने घर को याद करो और राजाई को याद करो। एमआबजेक्ट सामने खड़ी है। स्कूल में जो पढ़ते हैं तो पढ़ाने वाले भी याद रहते हैं और एमआबजेक्ट भी याद रहती है। तुम इतना भी याद नहीं करते हो। शान्तिधाम सुखधाम को ही याद करते हो। यहां तुमको यह आदत डाली जाती है कि चलते फिरते अपने को आत्मा समझो। शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। वहां मिलता भी है सुख और शान्ति। तो अपने घर को और सुखधाम को याद करो। वह है सुख का घाट। यह है दुःख का घाट। इतनी सहज बात भी तुम याद नहीं कर सकते हो। यहां बैठे भी तुमको बाहर की बातें याद आ जाती है। घड़ी2 तो नहीं बैठ कहेंगे कि शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। है तो वही गीता। भगवानुवाच भी है। भगवान तो जरूर स्वर्ग का मालिक बनायेंगे। जब कि स्वर्ग का मालिक बनाने वाला बाप बैठा है तो घर को स्वर्ग को याद करना है। तो अंत मते सो गति हो जायेगी। कहते भी हैं ईश्वर की गत मत न्यारी। अर्थात गति सदगति के लिये वह जो मत देते हैं वह सारी दुनियां से न्यारी है। कितने ढेर गुरु हैं। बाप ने समझाया है कोई भी धर्म स्थापक को गुरु नहीं कहा जाता। गुरु वापस ले जाने वाले को कहा जाता है। वह वापस तो ले जा नहीं सकते। वानप्रस्त वा निर्वाणधाम जाने लिये गुरु किया जाता है। परन्तु कोई भी ले जा नहीं सकते। इसलिये वानप्रस्ती कोई है नहीं। वानप्रस्त अर्थात वाणी से परे वह तो है शान्तिधाम। घर। वानप्रस्त का अर्थ न गुरु लोग न उन्हों के फालोअर्स जानते हैं। इसलिये कहा जाता है गुरु जिनके अंधला चेला सत्यानाश। सभी की सत्यानाश है। भ्रष्टाचारी है ना। श्रेष्टाचारी देवताओं के चित्र हैं। चित्र लोप नहीं होते हैं। इन चित्रों से ही समझाया जाता है। इसमें भी बच्चों को समझाया जाता है यह चित्र हैं सतयुग के। यह चित्र हैं त्रेता के। रामचन्द्र त्रेता का है ना। इनको भी भगवान नहीं कहा जा सकता। ल०ना० को भी भगवान भगवति नहीं कहा जा सकता। गाया जाता है आदि सनातन देवी देवता धर्म ही है। सिवाये देवी देवताओं के कोई भी स्थाई पवित्र नहीं होते। तुम 21 जन्म अस्थाई पवित्र रहते हो। फिर आस्ते2 सुख कम हो जाता है। त्रेता को कहेंगे सेमी। क्योंकि दो कला कम होती है। अभी तुम बच्चों को बाप और सृष्टिचक्र का परिचय मिला है। उनको ही याद करना है। तुम्हारी बुद्धि पता नहीं कहां2 चली जाती है। यह तो याद रखो ना। आस्तिक बनकर तो बैठो। बाप के और रचना के आदि मध्य अन्त को तुम जानते हो। उस झाड़ का आदि मध्य अन्त नहीं कहा जाता। उनका सिर्फ आदि और अन्त होता है। इनका तो तुम को आदि मध्य अन्त का समझाया जाता है। मध्य में रावण राज्य शुरु होता है। अर्थात कांटा बनने शुरु होते हैं। जो फूलों का बगीचा है वह जंगल बनना शुरु होता है। इस समय तो जड़, जड़ीभूत अवस्था, तमोप्रधान है अभी फिर फूलों के बगीचा का कलप लगता है। नहीं तो फिर प्रलय हो जाये। प्रलय अर्थात जलमय तो होती नहीं। भारत तो फिर भी रह जाता। बच्चे जानते हैं चारोंतरफ जलमई हो जाती है बाकी एक भारत जाकर रहता है। जैसे पानी के बीर चढ़ते हैं और फिर उतरते हैं। यहभी जैसे बीर चढ़ती है। फिर जब खत्म हो जाता है तो

वीर उतरती जाती है। तुमको बहुत लोग उलाहना देते हैं कि तुम ब्रह्माकुमारियां सिर्फ मौत2 ही कहती रहती हो। कुछ शुभ तो बोलो। सात वर्ष में मौत होगा आठ वर्ष में मौत होगा। मौत की ही बात सुनाते रहते हैं। हम तो कहते हैं पवित्रता सुखशान्ति का राज्य स्थापन होता है। गुप्त वेश में। यह स्वर्ग की स्थापना हो रही है। इतने ढेर मनुष्यजब वापस जावेंगेतब तो सुख शांति स्थापन होगी ना। हम तो शुभ बोलते हैं। बाप को ही कहते हैं बाबा आओ। हमको पवित्र बनाकर ले जाओ। तो तुम शुध बोलते हो। दुःख की दुनिया से हमको ले चलो। सुखधाम शान्तिधाम। यानि अपवित्रता का विनाश करो पावन दुनिया की स्थापनाकरो। विश्व में शान्ति करो। वह तो सतयुग में ही होते हैं ना। यह तो विनाश नहीं यह तो विश्व में शांति स्थापन हो रही है। परन्तु जब तुम किसको समझाओ नहीं तब तक समझ थोड़ेही सकेंगे। मनुष्य शान्ति मांगते हैं यानि मौत मांगते हैं। वह तो कोई दे न सके। बाप को ही कालों का काल कहा जाता है। सभी को मौत दे देते हैं। कितने को मौत देते हैं। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। बाकी सभी को मौत। बुलाते भी हैं हे पतित पावन आओ। पावन दुनिया में ले चलो। तो पुरानी दुनिया का जरूर मौत होगा ना। पुरानी दुनिया में पावन कैसे होंगे। मनुष्य पतित दुनिया और पावन दुनिया का अर्थ नहीं समझते हैं। पावन दुनिया में बहुत थोड़े मनुष्य और शान्ति रहते हैं। यह समझना, समझाना कितना सहज है' फिर भी किसकी बुधि में नहीं बैठता। यहभी ड्रामा अनुसार कहेंगे सभी की बुधि में नहीं बैठती नहीं बैठना है। कदाचित नहीं बैठना है। तब तो कहा जाता है कुम्भ करण के नींद में सोये पड़े हैं। वह कब नहीं सुनेंगे। कब नहीं जोगेंगे कब नहीं जागेंगे। ड्रामा बड़ा विचित्र है। यह सारा चक्र तुम बच्चों की बुधि में फिर चाहिए। बाप ही नालेज देते हैं। वही नालेफुल है। ज्ञान का सागर एक ही होता है। तुमको मालूम है सागर कितने होते हैं? नाम तो बहुत है ना। हरेक हिस्सा का अलग2 नाम रख दिया है। सागर तो एक ही है ना। फिर खण्डोंका अलग2 टूकड़ा2 कर दिया है। धरती भी एक हीहै। टूकड़ा2 हुये पड़े हैं। जब इन ल०ना० का राज्य था तो धरती भी एक थी। राज्य भी एक था। सारी धरती सारा सागर सारा आसमान तुम्हारा था। तुम्हारा ही राज्य होता है। शान्तिधाम में तो सभी जावेंगे। परन्तु जीवनमुक्ति में जाना कोई मासी का घर नहीं है। वह तो कामन बात है। सभधर जरूर लौटेंगे। बाकी नई दुनिया में सभी थोड़ेही जावेंगे। नई दुनिया में है ही तुम्हारा राज्य। फिर भी कई तो बहुत देरी से आते हैं। पुरानीदुनिया शुरू होने से थोड़ा बलहै। वह क्या हुआ। अच्छी तरह नहीं पढ़ते हैं तो बाको थोड़ा सुख पावेंगे। 16कला तो है नहीं। 14कला के भी पिछाड़ी में आते हैं। उनके सामने तो जैसे दुःख की दुनिया ही देखने में आती है। वहां भल कुछ मालूमनहीं पड़ता है यहनालेज अभी तुम्हारे बुधि में है। द्वापर से लेकर कलियुग तकपीछे पैसाकमाते2 इस समय तो देखो पैसे कितने हो गये हैं। कितने बड़े महल बनते हैं। कितनी मोटरें बनाते हैं। सतयुग में ऐसी मोटरें थोड़ेही होती है। सतयुग त्रेता में यह मोटरें आदि होती ही नहीं। द्वापर में नहीं होते। यह तो कलियुग में आकर इतने मोटर वाले मकान आदि बनाते हैं। क्योंकि बहुत मनुष्य हो जाते हैं ना। वृधि होती जाती है। इतने मनुष्य रहे कहां। जहां धंधा आदि बहुत हैं वहां बड़े2 मकान बनते हैं। जंगल से मंगल हो जाता है। मकान बनते जाते हैं। 80वर्ष में बम्बई देखो क्या से क्या हो गया है। कितने मनुष्य हो गये हैं। समुद्र को बैठ सुखाया है। पानी कम हो जाती है मनुष्य वृधि को पाते हैं तो पानी कहां से आवेगा। समुद्र से। कितना ढेर पानी खपता है। फिर पानी चढ़ जावेगा तो यह सभी खण्ड खत्म हो जावेंगे। सिर्फ सागर दवारा खत्म नहीं होती है। पहाड़ भी फटते हैं तो आजु बाजु सभी कुछ जला देते हैं' वन्डर है ना। बड़ा जोर से फटते हैं। आगे निकलते हैं। यह सभी आपदाएं आने वाली हैं। इसलिये बाप कहते हैं अभी जल्दी2तैयार होते रहो। विनाश के आगे तैयार होना है। बाप आये ही हैं विनाश के लिये। देखेंगे पूरी आग लगी है तो फिर चले जावेंगे। बाप सभी को साथ भी ले जावेंगे। यह होना भी जरूर है। परन्तु इन विचारों को शास्त्र बनाने वालों ने भय का गपोड़ा बनाकर दिया है। अभी तुम जानते हो यह तो वही गीता एपीसुड है जिसमें देवी देवताओं का राज्य स्थापन होता—

है। और सभी धर्म विनाश हो जाते हैं। भगवान की गाई हुई है एक गीता। बाकी तो जो कुछ पढ़ते रहते हैं पुरानी कथाएं हैं। ऐसी2 बातें धारण कर फिर सुनानी चाहिए। कई कहते हैं हमको धारणा नहीं होती है। सो भी बाबा कहते हम इसमें क्या करें। राजधानी स्थापन होती है इसमें तो सभी चाहिए ना। बाप में इतनी ताकत हो कृपा करने की फिर तो सभी को ऊंच बना दे। परन्तु नहीं। राजधानी नम्बरवार ही बननी है। यह तो कोई भी समझेंगे शिव बाबा भगवान ~~अवे~~ आये हैं तो जरूर नई दुनिया की सौगात ही ले आवेंगे। बाप जरूर नई दुनिया स्थापन अर्थ ही आवेंगे। और संगम युग पर ही आवेंगे। नई दुनिया की स्थापना करने। जिनको निश्चय ही नहीं है उन से भल कितना भी माथा आदि मारो कभी सुधरेंगे नहीं। बाप के पधारामणी का पैगाम तो जरूर देना है। आगे चल अखबारों में भी जोर से पड़ेगा। जैसे अखबारों द्वारा नाम बदनाम हुआ है फिर नाम वाला भी अखबारों द्वारा होगा। सभी अखबारों जो भी भाषाएं वाले हैं सभी में तुम्हारा नाम निकलेगा। ऐसे मत समझो हमको वहां जाना पड़ेगा। नहीं। अखबारों की सर्विस होनी है। उन द्वारा ही सुनेंगे भगवानुवाच मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। गीता में भी है ना। अखबारों में तो पड़ना ही है। जब नाम वाला होगा तो फिर पड़ना ही रहेगा। जैसे कल्प पहले पड़ा होगा। सभी को मैसेज मिल जावेगा। यह सभी इसके लिये ही युक्तियां चल रही हैं। किसकी बुधि में बैठ गया तो झट डालने लग पड़ेंगे। सभी धर्म वालों को मालूम पड़ जावेगा। तब तो गायन है ना अहो प्रभु तेरी लीला.... बाप की याद तो सभी को आवेगी। परन्तु कुछ भी कर नहीं सकते। अहो प्रभु आप की लीला अर्थात खेल। सभी अखबारों में पड़ जावेगा। जहां तहां अखबारों द्वारा ही मालूम पड़ जाता है। विनाश का समय भी आना है। ड्रामा के प्लैन अनुसार जैसे कल्प पहले मालूम पड़ा है अभी भी पड़ेगा। आगे चल देखना अखबार वाले कितनी तुम्हारी सर्विस करते हैं। धीरे2 स्थापना होनी है। सिर्फ ~~पुरुषोत्तम~~ पुरुषोत्तम संगम युग को ही तुम बच्चे ~~अवे~~ याद करो। संगम के बाद है सतयुग। संगम याद आवेगा तो स्वर्ग भी याद पड़ेगा। यह याद करो तो भी बेड़ा पार है। हम विश्व के मालिक बनते हैं। ड्रामा में यह सभी नूंध है। विनाश भी बड़ा अच्छा है। वह तो डरते हैं। परन्तु विश्व में शान्ति कैसे स्थापन हो सकती जब तक कि विनाश न हो। विनाश का कड़ा नाम सुनकर मनुष्य डरते हैं। है विनाश में स्थापना। स्थापना में विनाश। शिव बाबा को हाथ में नहीं है ना। यह (ब्रह्मा बाबा के) हाथ काम में लाते हैं। कहते हैं तुम्हारे लिये तीरी पर बहिश्त लाया हूं। हे बच्चों। तुम भी समझते हो बाबा ने हमारे लिये सौगात लाई है। फिर हम पुनर्जन्म भी स्वर्ग में लेंगे। वहां तो सुख ही सुख है। यहां तो है ही नर्क तो पुनर्जन्म भी नर्क में ही लेते हैं। अभी तुम समझते हो यह तो बरोबर राईट बात है। वहां तुम स्वर्ग में होंगे तो पुनर्जन्म भी स्वर्ग में ही लेंगे। पावन दुनिया में अनेक सुख है। एक बाप ही सभी बेहद के बच्चों के सौगात लाते हैं। तुम छोड़ो न छोड़ो बाप सौगात जरूर लाते हैं। उनको तो आकर ~~बच~~ बजाना ही है। बन्दर तो यह है ना। इतनी छोटी आत्मा है, उन में सारा पार्ट नूंधा हुआ है। रात दिन फर्क है। कहते भी हैं भृकुटि के बीच में ~~चमकता~~ चमकता है अजब सितारा। आत्मा को सितारा कहते हैं। यह तो है ही। अकाल मूर्त। जिसको काल नहीं खाता है। यह तो साकार मूर्त है जिसको काल खाता है। झाड़ पहले छोटा होता है। फिर पुराने पत्ते छनते जाते हैं। नये निकलते जाते हैं। झाड़ वृधि को पाता जाता है। जो छनते हैं वह फिर जन्म लेते रहते हैं। जो मरते हैं वह आकर जन्म लेते हैं। बाबा छनते2 (84 जन्म लेते) देखो झाड़ के अन्त आकर खड़ा हुआ है। फिर ऊपर में भी खड़ा है। दोनों जगह खड़े हैं। शुरू में है नारायण। पिछाड़ी में है ब्रह्मा। ब्रह्मा से जाकर नारायण बनते हैं। तत त्वम। यह तो बुधि में बैठना चाहिए ना। दोनों का खेल है। वह रात ब्रह्मा, वह दिन का नारायण। ब्राह्मणों की है रात। देवताओं का है दिन। तुम हो संगम युगी। वह है सतयुगी कलियुग से संगम युग से फिर सतयुग बननी है। कितना अच्छा समझाते हैं। दिन और रात के बीच का है पुरुषोत्तम संगम युग। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते

:- विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है :-